महाराणा सांगा 1509-1527

- जन्म - 12 अप्रैल 1482 में हुआ (कुम्भलगढ़ दुर्ग)
- पिता- रायमल
- माता - रत्नकुवंरी
- नोट- सिंद्ध गुरु जसनाथ जी का जन्म 1482 में (वि.स. 1539) हुआ

उपाधियाँ

- हिन्दू पात बादशाह
- सैनिकों का भग्नावेश (कर्नल टॉड)
- इन्हें सैनिकों का अंश भी कहा जाता है।

- सांगा के शरीर पर 80 घाव थे
- नोट- 80 खम्भों की छतरी अलवर में है।
- राज्यभिषेक 24 मई 1509 को 27 वर्ष की आयु में हुआ
- राज्यभिषेक के समय समकालीन शासक - युद्ध

  मालवा - नासिर शाह महमूद खिलजी द्वितीय

  गुजरात - महमूद बेगड़ा मुजफरशाह

  दिल्ली- सिकन्दर लोदी इब्राहिम लोदी

- महत्वपूर्ण - सिंकन्दर लोदी ने जसनाथ जी को 500 बीघा भूमि कतरियारसर गांव (बीकानेर) में दान दी।
- नोट- सिकन्दर लोदी ने जाम्भोजी के कहने पर गौ हत्या पर रोक लगाई।
- यमुना नदी पर स्थित तीन बड़े शहर
- Trick - आग दिल में लगी।

आगरा

दिल्ली

मथुरा

- भाईयों के विवाद में महाराणा सांगा ने अपनी एक आँख गंवाई।
- खातोली का युद्ध (कोटा) - 1517 में सांगा व इब्राहिम लोदी के मध्य हुआ जिसमें सांगा की विजय हुई। लेकिन उसका एक हाथ कट गया।
- बाड़ी का युद्ध (धौलपुर) - 1518 राणा सांगा ने इब्राहिम लोदी को पराजित किया।
- गागरोन युद्ध (झालावाड़) - 1519 राणा सांगा ने माडू
- सुल्तान महमूद खिलजी द्वितीय सांगा ने पराजित किया
- खिलजी को बन्दी बनाकर उसके कमरबन्द छीन लिए ।
- झाला हरिदास ने महमूद खिलजी को बन्दी बनाया हरिदास को राणा सांगा चितौड़गढ़ देना चाहता था, लेकिन हरिदास ने 12 गांव अपने पास रखे।

बाबर

- जन्म - 14 फरवरी 1483 फरगना में
- पिता - उमर शेख मिर्जा (तैमूर वंश)
- माता - खानम बेगम / कुतुनगीर (चगेंज वंश)
- बाबर का 11 वर्ष की आयु में 1494 में राज्यभिषेक हुआ।
- महत्वपुर्ण - 1507 में बाबर ने सुल्तान का पद समाप्त कर बादशाह का पद धारण किया।
- भारत में बाबर को दौलत खां लौदी (पूजाब शासक) व आलम खां (बाबर का चाचा) ने आमंत्रित किया ।

- "तुजुक ए बाबरी' (बाबर की आत्मकथा) में बाबर के कथन
- उसे भारत में आने के लिए राणा सांगा ने आमंत्रित किया
- बाबर ने अपने समय का भारत में सबसे शक्तिशाली शासक कृष्णदेवराय को माना है
- अपनी आत्मकथा में बाबर ने कमल के फल के बाग का वर्णन किया है, जो वर्तमान में धौलपुर में है
- बाबर ने हुमायुं से कहा- यह जीवन उसी का है, जो निरन्तर परिश्रम करता है, तथा विपरित पस्थितियों से घबराता नहीं

पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल 1526 (हरियाणा)

- इस युद्ध में बाबर ने इब्राहिम लादी को हराया तथा भारत में मुगल वंश की नीव रखी।
- नोट- इब्राहिम लोदी पानीपत के प्रथम युद्ध में मारा जाता है।
- इस युद्ध में लादी के सेनापति मियाँ हुसेन व मियाँ माखन थे।
- नोट- मोहम्मद शरीफ नामक सन्त ने बाबर के पराजय की भविष्यवाणी की थी।
- बयाना का युद्ध (भरतपुर) 16 फरवरी 1527 में हुए इस युद्ध में महाराणा सांगा ने बाबर को पराजित किया।

- इस युद्ध में बाबर का ख्वाजा मेहन्दी नामक सेनापति मारा गया जो दुर्ग अध्यक्ष था।
- ख्वाजा मेहन्दी तथा मिर्जा सुल्तान मारे गए।
- नोट- बयाना पक्षी, बन्ध बारेठा अभयारण भरतपुर में है ।
- महत्वपूर्ण - बयाना दुर्ग भरतपुर में है।
- उपनाम - विजयपुर, श्रीपंथ, शोणितपुर, बादशाह दुर्ग,
- यहां पर अकबरी छतरी, भीमलाट, लोदी मीनार, पछंगिरी दरवाजा, ऊषा मंदिर, ऊषा मस्जिद स्थित है

- इल्तुममिश ने इस दुर्ग को जीतकर इसमें बने ऊषा मंदिर को तोड़कर ऊषा मस्जिद बनवाई
- इस दुर्ग का नाम बादशाह दुर्ग रखा।
- नोट- पैनट नामक अग्रेज अधिकारी ने बयाना में नील की खेती के साक्ष्य बताये है।
- खानवा का युद्ध - 17 मार्च 1527 - यह युद्ध रूपवास तहसील, भरतपुर जिले में गंभीर नदी के तट पर खानवा के मैदान में राणा सांगा व बाबर के मध्य हुआ जिसमें बाबर विजयी हुआ।

- नोट- राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड कक्षा 12- कविराजा श्यामलदास के ग्रन्थ वीरविनोद के अनुसार यह युद्ध 16 मार्च 1527 को हुआ।
- खानवा युद्ध से पहले बाबर की रणनीति

  तमगा कर माफ किया

  शराबबन्दी पर रोक लगाई

  जिहाद का नारा दिया
- बाबर की जीत का मुख्य कारण-
- तुलूगमा पद्धति तथा उस्मानी पद्धति (रॉमी पद्धति) के
- प्रयोग किया + तोपों का प्रयोग।

- खानवा युद्ध के बाद बाबर ने गाजी की उपाधि धारण की।
- खानवा युद्ध के बाद बाबर ने भारत में मुगल वंश की वास्तविक स्थापना की।
- बाबर के मुख्य तोपची- मुस्तफा व उस्ताद अली सांगा के मुस्लिम सेनापति (हरावल सेना) हसन खां मेवाती था।
- सांगा का साथ महमूद लोदी ने दिया।
- राणा सांगा के रक्षा कवच रत्न सिंह चुड़ावत को करने के लिए कहा गया।
- इस युद्ध में घायल सांगा के राज चिन्ह झाला अज्जा (कीर्तिगढ़ सिन्धु प्रदेश निवासी था) ने धारण कर वीरगति पाई।

- राणा सांगा जब घायल हुआ तो मालदेव द्वारा बस्वा (दौसा) पंहुचाया गया।
- राणा सांगा के जाने के बाद युद्ध का नेतृत्व आमेर के पृथ्वीराज व सिरोही के अखैराज देवड़ा प्रथम ने किया।
- महत्वपूर्ण - राणा सांगा ने सभी राजपूत हिन्दू राजाओं को पत्र लिखकर युद्ध में आमंत्रित किया।
- राजपूतों में इस प्रथा को पाती परवण कहा जाता है।
- राणा सांगा मध्यकालीन भारत का अतिंम हिन्दुपात (हिन्दुओं को एकत्रित / एकजुट करने वाला) राजा था।

खानवा युद्ध में राणा सांगा का साथ देने वाले विभिन्न रियासतों के शासक-

मारवाड़	-	मालदेव
आमेर	-	पृथ्वीराज कच्छवाहा
बीकानेर	-	कल्याणमल
जालौर	-	अखैराज सोनगरा
बूंदी	-	नारायण देव
सिरोही	-	अखैराज चोहान
सादड़ी	-	झाला अज्जा (कीर्तिगढ़

सिन्धु प्रदेश का मूल निवासी)

मेड़ता	- वीरमदेव
जगनेर (भरतपुर)	- अशोक परमार
प्रतापगढ़	- देवलिया बाघ सिंह
चन्देरी	- मेदिनीराय
सलूम्बर	- रावल रत्नसिंह - चुण्डावत → हरावल
डूगरपुर	- रावल उदयसिंह
बयाना (भरतपुर)	- हसन खाँ मेवाती

- शोक परमार की वीरता को देखते हुए राणा सांगा उसे ऊपरमाल (विजौलिया से भीलवाड़ा) ठिकाना भेंट किया। खानवा युद्ध में राजपूत व मुगल सेना का अनुपात 2: 1 था।
- नोट- कर्नल टॉड के अनुसार राणा सांगा की सेना में 7 राजा, 9 राव व 104 सरदार थे।
- राणा सांगा के साथ विश्वासघात करने वाला व्यक्ति सिलहदी तंवर था।
- राणा सांगा अपनी सेना का पुर्नगठन करने के लिए इरिच गांव (दौसा) पंहुचा
- वहां चन्देरी के युद्ध में जाने से पहले राजपूत सरदारों ने धोखे से जहर दे दिया।

30 जनवरी 1528 को राणा सांगा की मृत्यु कालपी (यूपी) में हुई ।

30 जनवरी 1948 को महात्मा गांधी की हत्या नात्थूराम गोडसे ने की।

30 जनवरी को शहीद दिवस मनाया जाता है।

30 जनवरी को सर्वोदय दिवस मनाया जाता है।

30 जनवरी को कुष्ठ निवारण दिवस मनाया जाता है ।

- राणा सांगा का स्मारक बस्वा दौसा में है ।
- राणा सांगा की 8 खम्भों की छतरी माण्डलगढ़ (भीलवाड़ा) में है।
- यह छतरी अशोक परमार ने बनवायी ।

32 खम्भों की छतरी, जगन्नाथ कच्छवाहा की माण्डलगढ़ (भीलवाड़ा) में है।

32 खम्भों की छतरी राव जोधराज की बदनौर (ब्यावर) में है ।

जैत्रसिंह की 32 खम्भों की छतरी रणथम्भौर दुर्ग (सवाई माधोपुर) में है ।

महाराणा सांगा 32 मीटर की पगड़ी रखते थे ।

- माण्डलगढ़, भीलवाड़ा का नाहर नृत्य प्रसिद्ध है ।
- भील मीणाओं का संयुक्त नृत्य नैजा व हुन्दरी है।
- भीलों के प्रमुख नृत्य- गवरी, गैर, नैजा, हाथीमना, द्विचक्री, राई, युद्धनृत्य, घूमरा नृत्य, भगोरिया नृत्य आदि।
- महत्वपूर्ण - माण्डलगढ़ दुर्ग (भीलवाड़ा) में हल्दी घाटी युद्ध का अभ्यास किया गया था। → मुगल सेना ने अभ्यास किया

महाराणा सांगा

पत्नी - धनबाई कर्मावती | कर्णावती

पुत्र - भोजराज विक्रमादित्य

रत्नसिंह उदयसिंह

मीराबाई

रतनसिंह 1528-1531

- माता का नाम- धनबाई
- रत्नसिंह की मृत्यु 1531 में बूंदी के अहैरिया (आखेट) उत्सव में हुई।

विक्रमादित्य 1531-1536

- रत्नसिंह की मृत्यु के बाद उसका सौतेला भाई विक्रमादित्य मेवाड़ का शासक बना।
- कर्मावती ने रत्नसिंह का विरोध करते हुए अपने पुत्र विक्रमादित्य के पक्ष में बाबर से मदद मांगी परन्तु 1530 में ही बाबर की मृत्यु हो गई।
- गुजरात - मेवाड़ सन्धि 1533 कर्मावती ने कमरबन्द व राज्य चिन्ह (ये चिन्ह महमूद खिलजी द्वितीय से राणा सांगा ने छीन थे) तथा रणथम्भौर दुर्ग देकर बहादुर शाह से सन्धि कर ली।
- कर्मावती ने मुगलों के डर से अपने पुत्र (विक्रमादित्य को ननिहाल बून्दी में भेज दिया प्रशासन बाघसिंह व सज्जा को सौंप दिया।

- चितौड़ के इस शाके से पहले राणी कर्मावती ने हुमायू को राखी भेजी थी।
- चितौड़गढ के दूसरे शाके के समय मेवाड़ का महाराणा (शासक) विक्रमादित्य था!
- चितौड़ का दुसरा शाका 1534-1535 - गुजरात के बहादुर शाह ने चितौड़ पर पुनः आक्रमण कर दिया, जिसे चितौड का दूसरा शाका कहते हैं।
- नोट- बहादुर शाह ने रूमी खाँ नामक सेनापति को आक्रमण करने के लिए भेजा।
- केसरिया - बाघसिंह ने किया।
- जौहर - कर्मावती व विक्रमादित्य की पत्नी जवाहरबाई ने 13 हजार रानियों / महिलाओं ने किया ।

- नोट- बाघसिंह की छतरी चितौड़गढ किले में बनी है। महत्वपूर्ण - राजस्थान इतिहास का सबसे बड़ा / ऐतिहासिक शाका चितौड़गढ़ का दूसरा शाका कहलाता है।
- मेवाडी शासको ने 6 मार्च 1536 में बूंदी शासकों के सहयोग से पुन: विक्रमादित्य को मेवाड़ की गद्दी पर बैठा ।
- पृथ्वीराज सिसोदिया की दासी पुतल दे" के पुत्र बनवीर (1536-1540) ने महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर व मेवाड़ के शासक बन गया।
- बनवीर ने चित्तौडगढ़ में नवलकोट दुर्ग तथा तुलजा भवानी मन्दिर का निर्माण करवाया।

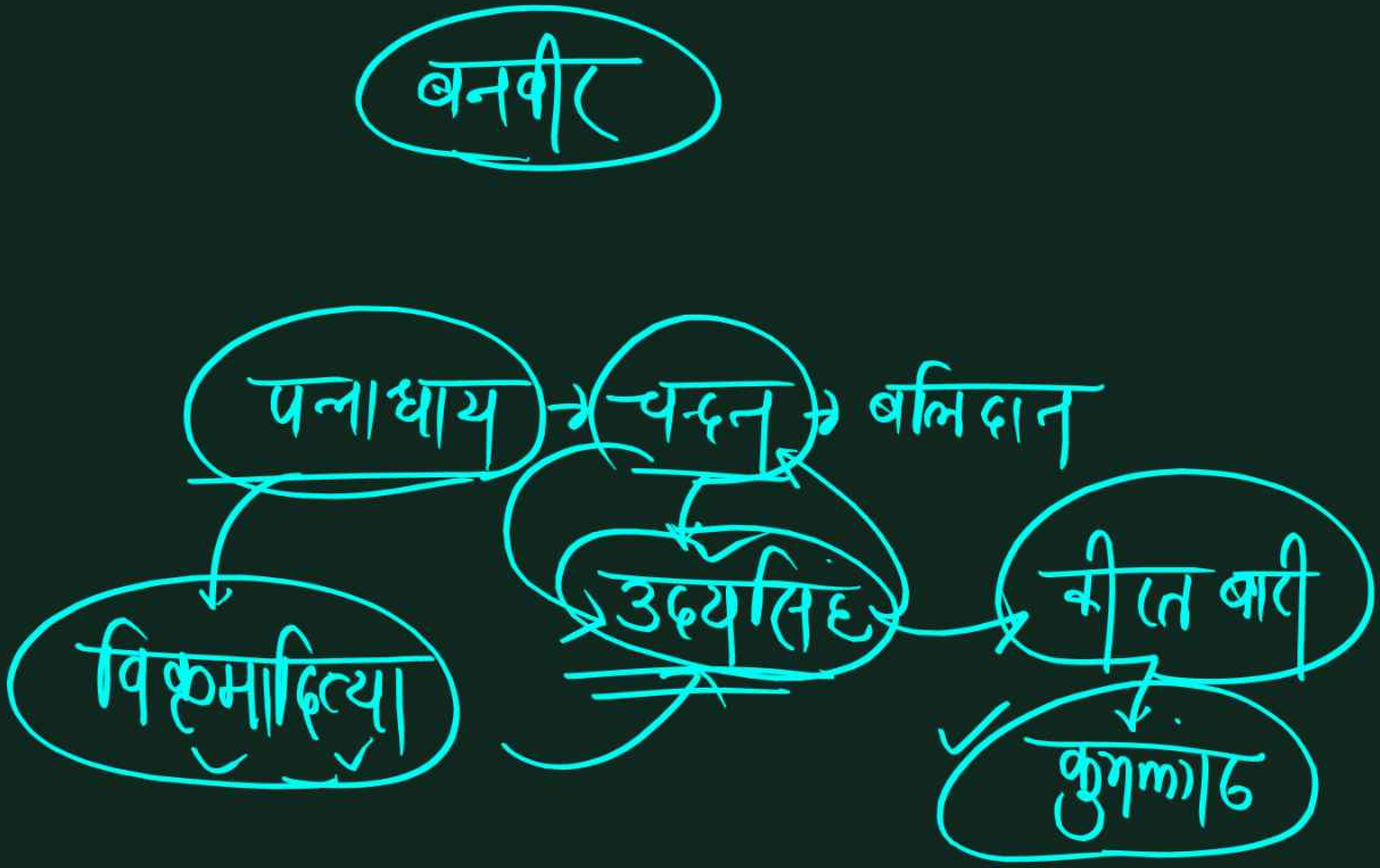
बनवीर
पन्नाधाय
चन्दन
बलिदान
उदयसिंह
विक्रमादित्य
कीरत बारी
कुम्भलगढ़

महाराणा उदयसिंह 1537-1572

- जन्म- चितौड़गढ़ दुर्ग
- पिता- महाराणा सांगा
- माता - कर्मावती
- कर्नल टॉड ने कहा- "अगर राणा सांगा व महाराणा प्रताप के बीच उदय सिंह न हुआ होता तो मेवाड़ का इतिहास और भी उज्जवल होता ।"
- पाली के अखैराज सोनगरा ने अपनी पुत्री जेवंताबाई का विवाह उदयसिंह से किया। उसी जैवन्ताबाई से महाराणा प्रताप का जन्म हुआ।

- सुरजमल चौहान की पत्नी पन्नाधाय ने अपने पुत्र चन्दन का बलिदान देकर मेवाड़ महाराणा उदयसिंह को पतल (झुठे पत्ते) चुनने वाले किरतबारी के सहयोग से कुम्भलगढ दुर्ग के दरबारी आशादेवपुरा के पास पहुचाया।
- नोट- महाराणा उदयसिंह का राज्यभिषेक 1537 में
- (15 वर्ष की आयु) कुम्भलगढ दुर्ग में हुआ।
- अफगान शासक शेरशाह सूरी ने चितौड़गढ पर आक्रमण किया तो उदयसिंह ने चितौड़गढ दुर्ग की चाबियां शेरशाह सूरी को सौंप दी।
- नोट- अफगानों (शेरशाह सूरी) की अधीनता स्वीकार करने वाला मेवाड़ का शासक उदयसिंह था।
- शेरशाहसुरी ने चित्तौड़ का दुर्गा अध्यक्ष मीया अहमद सरवानी को बनाया।

अफगानों की अधीनता स्वीकार करने वाले शासक-

- मेडता- वीरमदेव
- बीकानेर- कल्याणमल
- जयपुर- रत्नसिंह कछवाह

- 1540 में मारवाड़ शासक मालदेव की सहायता से महाराणा उदयसिंह ने बनवीर को पराजित कर चितौड़गढ पर अधिकार किया।
- उदयसिंह ने मालदेव को बसन्तराय हाथी उपहार में दिया।
- राजस्थान का पहला शासक उदयसिंह था, जिसने छापामार पद्धति या गुरिल्ला युद्ध पद्धति का प्रयोग किया था।

- नोट - छापा मार पद्धति में कुशल शासक महाराणा कुम्भा था।
- हरमाड़ा का युद्ध 1557- महाराणा उदयसिंह और अजमेर ठिकाने के हाजी खां (शेरशाह का सेनापति) के मध्य रंगराय नामक वैश्या के कारण 1557 हरमाड़ा का युद्ध हुआ
- जिसमें मालदेव की सहायता से हाजी खां की जीत हुई।
- 1559 में उदयसिंह ने उदयपुर की स्थापना की।

↳ अमर सिंह प्रथम के जन्म पर शहर बसाया

उदयपुर के उपनाम-

झीलों व भीलों की नगरी

पूर्व का वेनिस व्हाईट सिटी

सेलानियों का स्वर्ग

माउण्टेन फाउण्टेन की नगरी

राजस्थान का कश्मीर

एशिया का वियना

राजस्थान की जिंक नगरी

1459 में जोधपुर व मेहरानगढ (दुर्ग) की स्थापना राव जोधा ने की

1559 में उदयसिंह ने उदयपुर की स्थापना की।

1659 में दौराई (अजमेर) का युद्ध

1659 मे खजूआ का युद्ध जिसमें जसवन्तसिंह ने शाही शिविर लूटा

1759 में काकोड़ का युद्ध

18 अप्रैल 1859 को सिप्री (यूपी) में तात्या टोपे को फांसी

1959 को सर्वप्रथम राजस्थान में पंचायतीराज व्यवस्था की

अति महत्वपूर्ण-

- उदयसिंह ने 'उदयसागर झील का निर्माण करवाया तथा अपनी राजधानी उदयपुर को बनाया
- 1566 में अकबर ने चितौड़ पर आक्रमण किया, उदयसिंह ने मालवा के बाज बहादुर व मेड़ता (नागौर) के जयमल को शरण दी
- अकबर के आक्रमण के समय उदयसिंह गोगुन्दा की पहाड़ियों में चला गया
- चितौडगढ किले का भार अपने सैनिक जयमल व फता को सौंप दिया
- चितौड़गढ का तीसरा शाका- 1567-68

- केसरिया - जयमल व फता
- जौहर- फूलकंवर, 7000 महिलाएं
- जयमल व फता की वीरता से प्रभावित होकर अकबर ने आगरा दुर्ग के बाहर इनकी मूर्तियां बनवाई जिन्हें बाद मे औरंगजेब ने तुड़वा दिया।
- राजस्थान में जयमल व फता की गजारूढ मूर्तियां रायसिंह ने बीकानेर दुर्ग के मुख्य द्वार पर लगवाई।
- 1568 में अकबर ने चित्तौड़गढ़ का अध्यक्ष अब्दुल मजीद को नियुक्त किया।
- जयमल राठौड़ व फता सिसोदिया की छतरियां चितौड़गढ दुर्ग में बनी है।

- चितौड़गढ के इस शाके के बाद अकबर ने "फतह - ए - नामा" जारी किया।
- पिण्डोली का युद्ध - 25 फरवरी 1568 को अकबर ने चितौड़गढ़ फतह कर लिया तो मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह ने गोगुदा को राजधानी बनाया।
- 28 फरवरी 1572 ईस्वी में होली के दिन गोगुन्दा उदयपुर में महाराणा उदयसिंह की मृत्यु हो गई।
- नोट- होली / रंगो का त्यौहार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।
- उदयसिंह की छतरी गोगुन्दा उदयपुर में बनी हुई है।

महाराणा प्रताप 1572-1593

- एकमात्र शासक जिसका जन्म विक्रम संवत 1597 तथा मृत्यु सन् 1597 में हुई।
- जन्म 9 मई 1540 (ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को कुम्भलगढ दुर्ग के कटारगढ भाग में बने बादल महल / जुना कचहरी)

पिता - महाराणा उदयसिंह

माता - जैवन्ता बाई

पत्नि - अजबदे पंवार व द्दीहरबाई

पुत्र - अमरसिंह प्रथम, भगवानदास

गुरू - राघवेन्द्र

युद्ध प्रशिक्षण देने वाले गुरू- जयमल मेड़तिया महाराणा प्रताप के बचपन का नाम कीका था। घोड़े का नाम- चेतक / हेतक

हाथी का नाम - रामप्रसाद, गजप्रसाद, गजमुक्त, लूणा

उपाधियाँ

- सिसोदिया वंश का युवराज
- हल्दीघाटी का शेर
- वीर शिरोमणी
- मेवाड़ केसरी

- महाराणा प्रताप ने 25 वर्ष तक शासन किया।
- राज्यभिषेक- 28 फरवरी 1572 को 32 वर्ष की उम्र में गोगुन्दा (उदयपुर) में महाराणा प्रताप का राज्यभिषेक किया गया।
- महाराणा प्रताप का विधिवत राज्यभिषेक कुम्भलगढ दुर्ग में हुआ, वहां पर मारवाड़ शासक राव चन्द्रसेन मौजूद थे।
- महाराणा प्रताप की मृत्यु 57 वर्ष की आयु में हुई।
- अकबर द्वारा प्रताप के पास भेजे गए चार सन्धि प्रस्ताव-

- Trick जमा भाटो।

  ज - जलाल खां। सितम्बर 1572

  मा - मानसिंह जून। 1573

  भ - भगवन्तदास। अक्टूबर 1573

  टो - टोडरमल। दिसम्बर 1573

- अकबर द्वारा भेजे गए इन चारों सन्धि प्रस्तावों को प्रताप ने ठुकरा दिये।
- महाराणा प्रताप व मानसिंह की मुलाकात पिछोला झील (उदयपुर) के किनारे हुई।

- कुंवर मानसिंह गुजरात अभियान से आते वक्त डुंगरपूर के शासक आसकरण व बांसवाडा के शासक प्रतापसिंह को पराजित कर अमर सिंह प्रथम सिंह से मिला।
- 1570 में अकबर ने नागौर दरबार लगाया तथा अजमेर में अपने नाम से अकबर के किले का निर्माण करवाया (ख्वाजा मोइनुद्दीन के प्रति सम्मान करते हुए)
- अकबर के किले के उपनाम- मैग्जीन दुर्ग, दौलतखाना पूर्व का दूसरा जिब्रालटर
- यह एकमात्र दुर्ग है जिसका निर्माण मुस्लिम पद्धति से किया गया है।
- 1616 - में अंग्रेज अधिकारी सर टॉमस रॉ जहांगीर के साथ इसी अकबर / मैग्जीन दुर्ग में मिला।

- 1717 - में अंग्रेजों की व्यापार नीति पर हस्ताक्षर मुगल शासक फरूखशियर ने किये थे।
- 1818 - में अंग्रेजो से सहायक सन्धिया की थी।
- 1919 - में रोलेट एक्ट लागू हुआ था।

हल्दीघाटी युद्ध 18 जून 1576 बनास नदी के तट पर राजसमन्द-

- हिन्दी साहित्यकार गोपीनाथ शर्मा के अनुसार हल्दीघाटी का युद्ध 21 जून 1576 को हुआ।
- अमर काव्य वशांवली (रणछोड़ भट्ट द्वारा लिखित) में राजपूतों की विजय बताई गई है।
- डॉ. गोपीनाथ शर्मा के अनुसार हल्दीघाटी का युद्ध अनिर्णायक रहा।

उपनाम-

खमनौर का युद्ध – अबुल फजल

मेवाड़ की थर्मोपल्ली- कर्नल जेम्स टॉड

गोगुन्दा का युद्ध - बन्दयूनी

बादशाहबाग- ए एल श्रीवास्तव

जिहाद का युद्ध- आसिफ खां

अन्य नाम

पीली माटी का युद्ध- ✓

हाथियों की लड़ाई ✓

रक्त तलाई का युद्ध ✓

- यह युद्ध महाराणा प्रताप व अकबर के सेनापति मिर्जा राजा मान सिंह के मध्य हुआ → जीत → महाराणा प्रताप

राजा मानसिंह (आमेर) के मध्य हुआ।

मानसिंह- → मुगलों

युद्ध का अभ्यास - माण्डलगढ़ दुर्ग

व्यूह रचना- अकबर का किला

शिविर- मोलेला गाँव → टैरकौटा (कला)

हरावल सेना- हाशिम खां, आसिफ खां जगन्नाथ

चन्द्रावल सेना- मिहितर खा

हाथी का नाम- मर्दाना

महाराणा प्रताप-

युद्ध का अभ्यास - कुभलगढ़

व्यूह रचना- कुभलगढ़

शिविर- लोहसिंहवाला गाँव

हरावल सेना- हकिम खां सूरी, गोपीनाथ राजपुरोहित कृष्णदास चुंडावत

चन्द्रावल सेना- रामप्रसाद (पीर प्रसाद), गजप्रसाद गजमुक्त, लुणा

- नोट- मोलेला गांव (राजसमन्द) की टेराकोटा कला (देवी देवताओ की मूर्तियां बनाने की कला) प्रसिद्ध है ।
- महाराणा प्रताप का शस्त्रागार मायरा की गुफा (उदयपुर) में था ।
- अकबर ने मुजाहिद वेग को गोगुन्दा का सुबेदार नियुक्त किया।
- एकमात्र मुस्लिम सेनापति हकीम खां सूरी का मकबरा खमनौर (राजसमन्द) में है।
- आसिफ खाँ ने बदायूनी से कहा- तुम सिर्फ तीर चलाते जाओ, एक राजपूत मरना चाहिए। चाहे वो अपनी सेना में हो चाहे सामने वाली सेना में। हल्दीघाटी युद्ध में प्रसिद्ध इतिहासकार बन्दायूनी मौजूद था,
- इस युद्ध का आंखों देखा वर्णन अपने ग्रन्थ मुन्तखब-उत-तवारिख में किया है।
- हल्दीघाटी युद्ध के बाद बन्दायूनी ने अपनी दाढ़ी को राजपूतों के खून से रंगा ।

- हल्दीघाटी युद्ध के दौरान मैदान में मुगल शासक अकबर के आने की झूठी खबर फैलाने वाला व्यक्ति "मिहतर खां था।
- हल्दीघाटी युद्ध के बारे में जानकारी लेने के लिए अकबर ने अपने सेना नायक महमूद खां को भेजा था।
- महाराणा प्रताप के प्रिय हाथी का नाम रामप्रसाद था जिसे अकबर ने बाद में पीर प्रसाद नाम दिया था।
- अकबर के हाथी का नाम 'हवाई' था।
- महाराणा प्रताप के घोड़े चेतक की छतरी बलिचा गांव में स्थित है।
- बलिचा गांव में भारतीय प्रौद्योगिकी प्रबन्धन संस्थान (IIM) स्थित है।
- महाराणा प्रताप के घायल होने पर झाला बीदा या झाला मन्ना ने उनका राज्य चिन्ह लेकर लड़ना शुरू किया

- हल्दीघाटी युद्ध में अपना बलिदान देकर प्रताप को युद्ध के मैदान से सुरक्षित निकाला।
- हल्दीघाटी युद्ध के बाद महाराणा प्रताप के आवरगढ (उदयपुर) को अपनी अस्थायी राजधानी बनाया।
- हल्दीघाटी युद्ध के बाद कोल्यारी गांव उदयपुर में महाराणा प्रताप व इनके घायल सैनिकों का उपचार किया गया।
- अकबर ने हल्दीघाटी युद्ध के बाद चितौड़ व उदयपुर पर अधिकार कर लिया, अकबर ने उदयपुर का नाम मुहम्मदाबाद कर दिया।
- हल्दीघाटी युद्ध के बाद अकबर द्वारा महाराणा प्रताप के खिलाफ भेजे गए अभियान निम्न प्रकार है-
- कुम्भलगढ़ का युद्ध 1578 इस युद्ध को सार्वभौमिक का युद्ध कहा जाता है।

- 15 अक्टूबर 1578
- 15 दिसम्बर :579
- 15 नवम्बर 1580 तीनों बार शाहबाज खां को भेजा।
- 1581 में चौथी बार महाराणा प्रताप के पास अब्दुल रहीम खाने खाना को भेजा।
- अकबर ने पांचवी व अन्तिम बार जगन्नाथ कच्छवाहा को भेजा लेकिन वह भी प्रताप को बन्दी नहीं बना सका।
- महाराणा प्रताप इन आक्रमणों के समय कुम्भलगढ दुर्ग का प्रशासक भाण सोनगरा को सौपंकर वहां से जंगलों में चले गये।

- महाराणा प्रताप ने छाछन की पहाड़ियों (उदयपुर) में रहकर मुगलों पर गुरिल्ला पद्धति से आक्रमण जारी रखे। तब प्रताप की पत्नी अजबदे पंवार व पुत्र अमरसिंह प्रथम भी साथ थे।
- महाराणा प्रताप को आर्थिक सहायता पाली के भामाशाह व ताराचन्द ने चूलिया गांव में 20000 स्वर्ण मुद्राएँ देकर की।

भामाशाह को मेवाड़ का दानवीर कहा जाता है।

कर्नल टॉड ने भामाशाह में मेवाड़ का कर्ण कहा है।

भामाशाह का जन्म रणथम्भौर दुर्ग (सवाई माधोपुर) में 1547 में हुआ।

महाराणा प्रताप के प्रमुख ठिकाने-

- दिवेर (राजसमन्द) - प्रमुख ठिकाना
- देसूरी (पाली)
- देवल (डूंगरपुर)
- देवारी (उदयपुर)

- अकबर ने दिवेर ठिकाने का मुख्तियार सुल्तान खां को नियुक्त किया।
- दिवेर का युद्ध 15 अक्टुबर 1582 (राजसमन्द) –
- इतिहासकारो ने दिवेर युद्ध (राजसमन्द) को प्रताप की विजयों का श्री गणेश कहा है।

- कर्नल टॉड ने दिवेर के युद्ध को मेवाड़ का मैराथन कहा।
- इस युद्ध को महाराणा प्रताप के गौरव का प्रतीक कहा जाता है।
- इस युद्ध को देबारी दर्रा का युद्ध भी कहा जाता है।
- इस युद्ध में महाराणा प्रताप की विजय हुई तथा सुल्तान खां मारा गया।
- दिवेर के इस युद्ध में प्रताप का पुत्र अमरसिंह भी उसके साथ था।
- दिवेर युद्ध में मुगलों की 36 चौकियों पर महाराणा प्रताप ने कब्जा कर लिया।
- 36 द्वीप, लक्षद्वीप में है।
- 36 नियम जसनाथी सम्प्रदाय में जसनाथ जी ने बनाये थे। (सिद्ध सम्प्रदाय)
- 100 द्वीपों का शहर बांसवाड़ा

- 1584 में अकबर ने महाराणा प्रताप के विरूद्ध जगन्नाथ कच्छावाहा को भेजकर अन्तिम अभियान किया।
- जगन्नाथ कच्छावाहा की 32 खम्भों की छतरी माण्डलगढ (भीलवाड़ा) में है।
- 1585 से 1597 ई तक अन्तिक 12 वर्षो में महाराणा प्रताप व अकबर के बीच कोई युद्ध नहीं हुआ।
- इतिहासकार इसे अघोषित संधि कहते हैं।
- 1585 में प्रताप ने लूणा चावण्डिया को हराकर अपनी आपाताकलीन राजधानी चावण्ड को बनाया।
- महाराणा प्रताप द्वारा बनाई गई राजधानी चावण्ड सलुम्बर (पहले उदयपुर) 1585 से 1615 तक रही।

- 1585 में ही प्रताप ने चामुण्डा माता का मंदिर चावण्ड सलुम्बर (पहले उदयपुर) में बनाया।
- 1585 में महाराणा प्रताप के समय चावण्ड चित्रकला शैली का उदभव हुआ।
- स्वर्णकाल- अमरसिंह प्रथम का काल
- 1585 में राजस्थान का कबीर दादूदयाल जी मुगल शासक अकबर से फतहेपुर सीकरी (आगरा) में मिले तथा गौ हत्या पर रोक लगवाई।

राजधानियों का क्रम निम्न है-

- गोगुन्दा (प्रथम) - कुम्भलगढ
- आवरगढ (अस्थायी) - कुम्भलगढ
- दिवेर - चावण्ड (अन्तिम)
- 19 जनवरी 1597 को 57 वर्ष की उम्र में चावण्ड सलुम्बर (पहले उदयपुर) में महाराणा प्रताप की मृत्यु हो गई।
- महाराणा प्रताप की 8 खम्भों की छतरी खेजड़ बान्ध के पास बाडोली सलुम्बर (पहले उदयपुर) में है ।
- इस छत्तरी का निर्माण भामाशाह ने करवाया। | अमरसिंह प्रथम

- महाराणा प्रताप का स्मारक मोती मगरी (उदयपुर) व दिवेर (राजसमन्द) में बना है।
- राजस्थान में खेल के क्षेत्र में दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान महाराणा प्रताप खेल रत्न पुरस्कार / राजस्थान खेल रत्न पुरस्कार है।
- पहला राजस्थान खेल रत्न पुरस्कार तीरंदाज लिम्बाराम को दिया गया।
- दानदाताओं को दिया जोन वाला पुरस्कार- भामाशाहु पुरस्कार ।
- साम्प्रदायिक सद्भावना की दृष्टि से दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान हकीम खां सुरी पुरस्कार है।
- महाराणा प्रताप के दरबारी विद्वान

- चक्रपाणी मिश्र के ग्रन्थ :-
  1. विश्व वल्लभ
  2. राज्यभिषेक पद्धती
  3. शुभ मुहुर्त माला
- हैमरत्न सुरी- गौरा बादल पद्मनी चौपाई
- संगीतज्ञ - रामासान्धु इनका ग्रन्थ झुलणा
- महाराणा प्रताप पर 1967 में 15 पैसे का डाक टिकट जारी किया गया।
- जसनाथ जी के प्रमुख ग्रन्थ- जल्म झुलरों सिद्ध राजरो सिर लोको

महाराणा प्रताप के प्रमुख स्थान-

मायरा की गुफा - प्रमुख शस्त्रागार

जावर - शस्त्र छुपाऐं गए

कोल्यारी की गुफा - महाराणा प्रताप तथा इनकी सेना का ईलाज यहीं किया गया।

मचिन - महाराणा प्रताप का राज परिवार ने निवास किया।

- धोलिया गांव- सकंट के समय महाराणा प्रताप का परिवार (उदयपुर)
- कन्हैया लाल सेठिया की रचना पाथल और पीथल (राजस्थान भाषा)
- पाथल शब्द- महाराणा प्रताप के लिए
- पीथल शब्द- पृथ्वीराज राठौड़ के लिए (कल्याणमल का पुत्र, बीकानेर)

- महाराणा प्रताप की चावण्ड राजधानी 1585-1597 (12 वर्ष)

  अमरसिंह प्रथम की राजधानी- 1597-1615 (18 वर्ष)

  चावण्ड राजधानी रही 1585-1615 (30 वर्ष)

अमर सिंह प्रथम 1597-1620

- जन्म 16 मार्च 1559
- पिता- महाराणा प्रताप
- माता- अजवदे पंवार
- राज्यभिषेक- 19 जनवरी 1597 को चावण्ड (उदयपुर) में।
- ऊठांला का युद्ध 1599 में अकबर ने जहांगीर के नेतृत्व में मेवाड़ पर सेना भेजी लेकिन उदयपुर के निकट मेवाड़ की सेना ने ऊठांला नामक स्थान पर मुगल सेना को हरा दिया।
- जहांगीर द्वारा अमरसिंह पर किये गये आक्रमण-

Trick- परनै मर जी अंब

अलियार

- परवेज खां (1605) असफल
- महावत खां असफल
- अब्दुल रहीम खाने खाना

अब्दुला खां-

- 1605 में अकबर की मृत्यु के बाद जहांगीर ने सम्राट बनते ही मेवाड़ अभियान प्रारम्भ किया तथा अपने पुत्र परवेज को युद्ध में भेजा लेकिन वह असफल रहा।
- 1613 में जहागीर अजमेर दुर्ग में पहुचकर मेवाड़ अभियान का नेतृत्व करता है।
- मुगल सेना ने शाहजहां व अब्दुररहीम खानेखाना के नेतृत्व में आक्रमण किया तथा मेवाड़ में कत्लेआम किया तथा फसलों को जला दिया।
- मेवाड़ में इस अराजकता को देखकर अमरसिंह के पुत्र कर्णसिंह ने मेवाड़ी सामन्तों के साथ मिलकर अमरसिंह को सन्धि करने की सलाह दी।
- मुगल मेवाड़ सन्धि- 5 फरवरी 1615 ई.

- मेवाड़ के अमरसिंह व मुगल शासक जहांगीर के बीच मुगल मेवाड़ सन्धि हुई।
- मेवाड़ मुगल सन्धि में राणा अमरसिंह की ओर से हरिदास झाला व शुभकरण शाहजहां के पास गए → गोगुन्दा
- शाहजहां ने मुल्ला शकुल्लाह शीराजी व सुन्दरदास को जहांगीर के पास भेजा
- सन्धि के पश्चात जहांगीर ने कुंवर कर्णसिंह को रतलाम, फुलिया, बांसवाड़ा, नीमच, अरनोद आदि परगने जागीर में दिये।
- इस संधि पर मुगलों की तरफ से खुर्रम व मेवाड़ की ओर से अमरसिंह प्रथम ने हस्ताक्षर किये।
- मुगलों की अधीनता स्वीकार करने वाला मेवाड़ का प्रथम महाराणा अमरसिंह था।
- मेवाड़ - मुगल संधि की प्रमुख शर्तें-

- मेवाड़ का शासक मुगल दरबार में उपस्थित नहीं होगा बल्कि उसका पुत्र मुगल दरबार में उपस्थित होगा।
- चितौड़ किले की किलेबंदी या निर्माण कार्य नहीं करवायेगा।
- मेवाड़ मुगलों के बीच कोई भी वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित नहीं होगा।
- सबसे पहले मुगल दरबार में उपस्थित होने वाला राजकुमार कर्णसिंह था।
- अमरसिंह प्रथम ने मुगलों के साथ 17 युद्ध किये तथा सभी में विजय प्राप्त की।
- रणथम्भौर शासक हम्मीर देव चौहान ने भी अपने जीवन में 17 युद्ध लड़े थे जिसमें से उसे 16 में विजय प्राप्त हुई थी। लेकिन 1301 का एकमात्र युद्ध वह हार गया था।
- चावण्ड चित्रकला शैली का स्वर्णकाल - अमरसिंह का काल

- 1605 में मेवाड़ स्कूल की चावण्ड चित्रकला शैली रागमाला पर आधारित चित्र अमरसिंह प्रथम के समय नसिरूद्दीन नामक चित्रकार ने बनाया।
- 26 जून 1620 को राजसमन्द झील के किनारे अमरसिंह प्रथम की मृत्यु हो गयी।
- महाराणा अमरसिंह का अन्तिम संस्कार आहड़ (उदयपुर) में किया गया।
- आहड़ (उदयपुर) की महासतियों में सबसे पहली छतरी महाराणा अमरसिंह प्रथम की छतरी है
- आहड़ को मेवाड़ के महाराणाओं का शमशान कहते है।

कर्णसिंह 1620-1628

- राज्यभिषेक- 26 जून 1620
- मुगल दरबार में उपस्थित होने वाला पहला राजकुमार कर्णसिंह था।
- महाराणा कर्णसिंह मेवाड़ का प्रथम राजा था, जो मुगल दरबार में उपस्थित में गुजरात अभियान के दौरान मुगल शासक शाहजहां (खुर्रम) ने जग मंदिरो में शरण ली. शाहजहां ने इन्हीं जगमंदिरों को देखकर ताजमहल बनवाने का विचार किया।
- कर्णसिंह ने पिछोला झील (उदयपुर) में जग मंदिर का निर्माण शुरू करवाया लेकिन इनको पूर्ण इसके पुत्र जगतसिंह प्रथम ने करवाया।

- महाराणा कर्णसिंह ने उदयपुर में दिलखुश महल व कर्ण विलास महल का निर्माण करवाया।
- कर्णसिंह ने उदयपुर को अपनी राजधानी बनाया जो कि स्वतंत्रता तक मेवाड़ की राजधानी रही।
- उदयपुर का जगमंदिर तीन राजाओं (महाराणा कर्णसिंह, महाराणा जगतसिंह प्रथम, जेतसिंह द्वितीय) द्वारा निर्मित करवाया गया।

जगतसिंह प्रथम 1628-1652

- राज्यभिषेक- 28 अप्रेल 1628
- अमरसिंह के काल में हुई मुगल मेवाड़ संधि का उल्लघंन हुआ
- जगतसिंह प्रथम ने चितौड़गढ दुर्ग की मरम्मत करवाई।
- इस सन्धि का उल्लघंन करने के जुर्म / अपराध में मुगल बादशाह शाहजहां ने जगतसिंह प्रथम के समय आदेश देते हुए मेवाड़ रियासत के हिस्से की प्रतापगढ व शाहपुरा रियासत को मेवाड़ से पृथक कर नवीन रियासत के रूप में मान्यता प्रदान की।
- जगतसिंह ने पिछौला झील पर बने जगमंदिरो का निर्माण कार्य पूरा करवाया इसी के नाम पर इन मंदिरों का नाम जगमंदिर पड़ा।

- इन जगमंदिरों का निर्माण कार्य सूत्रधार भाणा व उसके पुत्र मुकेन्द की देखरेख से बना
- इसी मंदिर में कृष्ण भट्ट द्वारा रचित जगन्नाथ प्रशस्ति लिखी है।
- महाराणा जगतसिंह प्रथम ने ही पिछौला झील पर मोहन मंदिर व रूपसागर तालाब का निर्माण करवाया।
- महाराणा जगतसिंह प्रथम की धाय माँ नौजूबाई ने उदयपुर में धाय मंदिर तथा जगतसिंह प्रथम ने पंचायतन शैली (नागर शैली) के विष्णु मंदिर का निर्माण भी करवाया।
- मेवाड़ चित्रकला शैली का स्वर्णकाल जगतसिंह प्रथम का काल था ।
- जगतसिंह ने अपने दरबार में चित्रकारों के लिए चितेरों री ओवरी (तस्वीरा रो कारखानों) नामक संस्था उदयपुर में बनवाई।

मेवाड़ चित्रकला शैली-

प्रमुख रंग- लाल व पीला

पक्षी - चकौर

प्रमुख पशु - हाथी

प्रमुख चित्र - रागमाला, रसिकप्रिया, गीतगोविन्द, रामायण आदि के चित्र

प्रमुख वृक्ष- कदंब

प्रमुख चित्रकार - साहीबदीन, मनोहरलाल

जगतसिंह प्रथम की मृत्यु 1652 में हुई

राजसिंह 1652-1680

- राज्यभिषेक - 10 अक्टूबर 1652
- महाराणा राजसिंह ने विजयकटकातु की उपाधि धारण की।
- 1680 में कुम्भलगढ में राजसिंह की मृत्यु हुई। यही पर इनकी छतरी है।

राजसमन्द झील-

- 1662-1676- में अकालराहत कार्यों के लिए गोमती नदी के पानी को रोककर राजसिंह ने राजसमन्द जिले में राजसमन्द / राजसमुन्द्र झील का निर्माण करवाया।
- राजसमन्द झील की नींव घेवर माता द्वारा रखवाई गई।
- राजसमन्द झील के उतरी किनारे को नौ चौकी की पाल कहते है।
- इस पर संसार का सबसे बड़ा शिलालेख / प्रशस्ति राजप्रशस्ति रणछोड़ भट्ट द्वारा संस्कृत भाषा में 25 शिलालेखों पर (1676) उत्कीर्ण की गई है।
- औरंगजेब का राजसिंह के प्रति विरोधी होने के कारण निम्न हैं-

- मारवाड़ के शासक अजीत सिंह को राजसिंह द्वारा मेवाड़ में सहायता देते हुए केलवा जागीर (उदयपुर) प्रदान करना।
- केलवा नदी जयसमन्द झील में अपना जल गिराती है।
- राजसिंह द्वारा चितौड़गढ की किलेबन्दी करवाना
- औरगजेब ने सादुल्ला खां को भेजकर चितौड़ का निर्माण कार्य बन्द करवाया।
- राजसिंह द्वारा गैर मुसलमानों से लिया जाने वाला जजिया कर न वसुलना।
- किशनगढ की राजकुमारी चारूमती से राजसिंह न विवाह किया था जिसके साथ औरगजैब विवाह करना चाहता था।
- रत्नसिंह की पत्नी का नाम सहल कवंर था ।
- अपने पति को युद्ध में अपना सिर काटकर निशानी क रूप में भेजा था।

- चूड़ावत मागी सेनाणी, सिंर काट दे दियों क्षत्राणी ये पंक्ति सहलकंवर / सलहकंवर के लिए प्रसिद्ध है
- इसे हाड़ी रानी कहा जाता है।
- सैनाणी रचना मेघराज मुकुल ने लिखी।
- राजस्थान की पहली महिला बटालियन- हाड़ी रानी थी।
- हाड़ी रानी की बावड़ी - टोडारायसिंह (टोंक) में है।
- हाड़ी रानी (सहलकंवर) का स्मारक - सलुम्बर (पहले उदयपुर) में है।
- अग्नि स्नान करने वाली देवी - ईडाणा माता सलूम्बर में है।
- रत्नसिंह चूडावत का स्मारक देसूरी की नाल (पाली) में है।

सत् री सैनाणी मांगी समर सलूम्बर धीस।
इण धर मैल्यो सीया उण धर मैल्यो शीश ।।

- राजसिंह के समय नाथद्वारा में वल्लभ संप्रदाय पीठ की स्थापना की गई।
- नाथद्वारा चित्रकला शैली का उदभव तथा स्वर्णकाल राजसिंह का काल

नाथद्वारा शैली के प्रमुख चित्रकार

इलायची, चम्पालाल

नाथद्वारा शैली का उदगम 10 फरवरी 1672

प्रमुख पशु- गज, गाय

मुख रंग - पीला व हरा

प्रमुख वृक्ष- केला

महत्वपूर्ण

नौ ग्रहों का मंदिर - किशनगढ़ (अजमेर)

नौ नाथों का मंदिर - महामंदिर (जोधपुर) नौलखा बावड़ी - डूंगरपुर

नौखण्डा महल- चितौड़गढ़

नौ चौकी का पाल- राजसमन्द झील का उतरी

किनारा

नौलखा झील- बूंदी

नौ मंजिल इमारत- विजय स्तम्भ

नौ महल (एक जैसे)- नाहरगढ दुर्ग में (जयपुर)

नौलखा दरवाजा- रणथम्भौर दुर्ग में (सवाई माधोपुर)

नौलखा तालाब- बारां

नवल वाहन तोप - शाहबाद दुर्ग (बारां में)

सम्पूर्ण पहाड़ा 9 का होता है-

नौ गजा पीर की दरगाह - चितौड़गढ़ दुर्ग में

नौ बुर्जे में विभक्त दुर्ग- चूरू का किला

महाराणा जयसिंह 1680-1698

- जयसिंह ने (1687 - 1691) के बीच अकाल राहत कार्ये के लिए गोमती नदी के पानी को रोककर जयसमन्द झील / देबर झील सलुम्बर (पहले उदयपुर) का निर्माण करवाया।
- जयसमन्द झील पर सात बड़े टापू है जिसमें सबसे बड़े टापू को बाबा का भंगड़ा व छोटे टापू की प्यारी के नाम से जाना जाता है।
- इन टापूओं पर भील व मीणा जनजाति के लोग रहते है ।
- जयसमंद झील के किनारे राजकुमार के महल स्थित है ।
- जयसमन्द झील के किनारे नर्मद्धेश्वर महादेव का मंदिर जयसिंह ने बनवाया।
- इस झील के किनारे जयसिंह की पत्नि कोमलावती का महल है। जो रूठी रानी का महल के नाम से जाना जाता है

अमरसिंह द्वितीय 1698-1710

- अमरसिंह द्वितीय के समय मुगल शासक औरगंजेब की मृत्यु हुई।
- 1707 के बाद उराधिकारी संघर्ष शुरू हुआ।
- औरगंजेब के चार पुत्र थे-

  मुअज्जम

  आजम

  कामबख्श

  शहजादा अकबर

कामबख्श राजा नहीं बनना चाहता था।

शहजादा अकबर / अकबर द्वितीय पारस (ईरान) चला गया।

मुअज्जम व आजम के बीच उराधिकार संघर्ष हुआ।

जोजऊ का युद्ध - यूपी 1707

- यह युद्ध मुअज्जम व आजम के मध्य हुआ जिसमें मुअज्जम का साथ विजयसिंह व आजम का साथ सवाई जयसिंह द्वितीय (जयपुर) ने दिया।
- इस युद्ध में मुअज्जम की विजय हुई तथा उसने अपना नाम बदल कर बहादूरशाह रखा।
- मुअज्जम ने इस युद्ध को जीतने के बाद जयपुर के सवाई जयसिंह को हटाकर विजयसिंह को जयपुर को राजा बना दिया तथा जयपुर का नाम बदलकर मोमिनाबाद / इस्लामबाद रख दिया।

- अमरसिंह के समय मारवाड़ मेवाड़ व आमेर के मध्य 707-8 में देबारी समझौता हुआ।

1707 में देबारी समझौता (उदयपुर)

1707 में औरगजेब की मृत्यु

1707 में मुगल उतराधिकार संघर्ष शुरू

1807 में कृष्णा कुमारी विवाद

1907 में कांग्रेस का विभाजन (सूरत अधिवेशन में)

देबारी समझौता 1707-08

- मारवाड़ शासक अजीतसिंह ने अपनी पुत्री सूरज कुंवरी का विवाह सवाई जयसिंह द्वितीय से किया।
- मेवाड़ शासक अमरसिंह ने अपनी पुत्री चन्द्र कुंवरी का विवाह सवाई जयसिंह द्वितीय से किया।
- देबारी समझौते में तय हुआ था कि चन्द्रकुंवर से उत्पन्न संतान (माधोसिंह प्रथम) ही कच्छवाह वंश का शासक बनेगा।
- सूरजकुंवरी का पुत्र ईश्वरीसिंह राजा बना।

महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय 1710-1734

- संग्राम सिंह द्वितीय ने उदयपुर में फतेहसागर झील के किनारे सहेलियों की बाड़ी बनवायी।
- 1719 में संग्रामसिंह के समय सीसारमा गांव में पिछौला झील के किनारे वैद्यनाथ मंदिर पर रूपभट्ट ने वैद्यनाथ प्रशस्ति लिखी।
- जिसमें बप्पा रावल को हरित ऋषि के आर्शीवाद से साम्राज्य मिलने का वर्णन मिलता है।
- हुरड़ा सम्मेलन (भीलवाड़ा) 17 जुलाई 1734- मराठों के प्रवेश को रोकने हेतु सवाई जयसिंह द्वितीय ने सभी राजपूत राजाओं को हुरड़ा नामक स्थान (भीलवाड़ा) पर एकत्रित किया।

- इस सम्मेलन की अध्यक्षता सर्वप्रथम संग्रामसिंह द्वितीय को सौंपी, लेकिन इनकी मृत्यु होने के कारण हुरड़ा सम्मेलन की अध्यक्षता मेवाड़ शासक जगतसिंह द्वितीय को सौपी गई।
- संग्राम सिंह द्वितीय के समय कलिला (अच्छाई का प्रतीक) दमना (बुराई का पात्र) पर चित्र बने।
- कलिला - दमना चित्र नुरूद्दीन नामक चित्रकार ने बनाया।
- कलिला दमना पंचतंत्र के दो भाग पाये है।
- पंचतंत्र रचना विष्णु शर्मा की है।
- संग्राम सिंह के समय प्रसिद्ध चित्रकार / साहित्यकार करणीदान था।

जगतसिंह द्वितीय 1734-1751

- जगतसिंह ने संग्रामसिंह की मृत्यु के बाद हुरड़ा सम्मेलन की अध्यक्षता की।
- हुरड़ा सम्मेलन में राजपुताना के निम्न शासकों ने भाग लिया ।

नागौर - बख्तसिंह

किशनगढ - रायसिंह

करौली - गोपालदास

बीकानेर - जोरावर सिंह

बूंदी - दलेल सिंह (जयसिंह द्वितीय। के दामाद)

जोधपुर - अभयसिंह

कोटा - दुर्जनशाल

- जगत सिंह द्वितीय ने जगमंदिरों का पुनः निर्माण करवाया।
- जग निवास महल का निर्माण कार्य भी जगतसिंह द्वितीय ने किया।
- जगतसिंह द्वितीय के समय जगतविलास ग्रन्थ की रचना नेकराम ने की।
- मेवाड़ में सर्वप्रथम जगतसिंह द्वितीय के समय मराठों ने चौथ वसूली कर लिया।
- मराठों ने सर्वप्रथम (राजपूताना में) आक्रमण बूंदी पर किया उस समय बूंदी का शासक (अपदस्थ) उम्मेद सिंह था।
- जगतसिंह ने जगदीश मंदिर (उदयपुर) का पुनः निर्माण करवाया जिसे सपनों से बना मंदिर भी कहते हैं।
- जगतसिंह के समय अफगान आक्रमणकारी नादिरशाह ने 1739 ई में दिल्ली (मोहम्मदशाह) पर आक्रमण किया।
- नादिरशाह के युद्ध (करनाल 1739) की भविष्यवाणी चरणदास जी ने की।

राणा भीमसिंह 1778-1828

- कृष्ण कुमारी विवाद- 1807-
- यह विवाद 1803 से 1810 तक चला (7 वर्ष) महाराणा भीमसिंह की पुत्री थी
- मारवाड़ शासक मेवाड़ शासक जयपुर शासक भीमसिंह महाराणा भीमसिंह जगतसिंह द्वितीय
- पहले कृष्णकुमारी का विवाह भीमसिंह (मारवाड़) के साथ तय हुआ था। लेकिन उसकी मृत्यु हो गई इसलिए कृष्णकुमारी का विवाह जयपुर के जगतसिंह द्वितीय के साथ तय किया गया।
- लेकिन इसका विरोध मारवाड़ के मानसिंह राठौड़ ने किया क्योकि वह कृष्णकुमारी से विवाह करना चाहता था।

गिंगोली का युद्ध 1807

- यह युद्ध मानसिंह राठौड़ व जगतसिंह द्वितीय के बीच हुआ
- अमीर खां पिण्डारी (टोंक) की सहायता से जगतसिंह द्वितीय की जीत हुई ।
- 1810 में अमीर खां पिण्डारी (टोंक) तथा अजीतसिंह चुड़ावत (आसीन्द - भीलवाड़ा) के सहयोग से फरवरी माह में महाराणा भीमसिंह ने अपनी पुत्री कृष्णकुमारी को जहर देकर विवाद को समाप्त किया।
- राणा भीमसिंह ने कर्नल टॉड के नाम पर बोरसवाड़ा गांव का नाम टॉडगढ रखा।
- 1818 में राणा भीमसिंह ने अंग्रेजी से संधि की।
- टोंक की स्थापना 1817 में अमीर खां पिण्डारी ने की।

महाराणा सरदारसिंह 1838-1842

- भीलों को उपद्रवों को दबाने हेतु इन्होनें 1841 ई. में मेवाड़ भील कौर (MBC) का गठन किया, जिसका विलय 1950 में राजस्थान पुलिस विभाग में कर दिया गया है।
- पुलिस नये भर्ती होने वाले सिपाही को रंगरूट कहते है। Contable का हिन्दी में नाम आरक्षी

महाराणा स्वरूपसिंह 1842-1851

- इसने विजयस्तम्भ का जीर्णोद्वार करवाया (9वीं मंजिल) स्वरूपसिंह ने मेवाड़ में स्वरूप शाही सिक्के चलवाये जिन पर चित्रकुट उदयपुर तथा दूसरी तरफ गंधन दोस्ती अंकित था।
- महाराणा स्वरूपसिंह ने पिछोला झील (उदयपुर) का जीर्णेद्वारा करवाया।
- स्वरूपसिंह ने जीवित समाधि, सती प्रथा, कन्या वध जैसी सामाजिक बुराईयों को रोकने का काम किया।
- 1857 की क्रांति में अंग्रेजो का साथ देने वाला राजस्थान का पहला राजा स्वरूपसिंह था।
- स्वरूप ने 1857 की क्रांति में 40 अंग्रेज अधिकारियों को पिछौला झील पर बने जगमंदिर (उदयसिंह) में शरण प्रदान की तथा इनकी देखरेख का कार्य गोकुललाल को सौंपा।
- स्वरूप सिंह की मृत्यु के बाद एंजा बाई सती हुई जो शासकों के पीछे सती होने वाली अन्तिम महिला मानी जाती है।

महाराणा शम्भूसिंह 1861-1874

- शम्भूसिंह को लार्ड रिपन ने G. C. I. (grate com - mander sotats of India) की उपाधि दी।
- शम्भूसिंह के काल में श्यामदास द्वारा 1871 में वीरविनोद ग्रन्थ का लेखन प्रारम्भ किया जो 1892 में (21 वर्ष) पुरा किया गया।
- कविराज श्यामलदास- इनका जन्म छालीवाड़ा गांव (भीलवाड़ा) में मेवाड़ महाराणा सज्जनसिंह ने श्यामलदास को कविराज एवं महामहोपाध्याय की उपाधि प्रदान की।
- श्यामलदास को ब्रिटिश सरकार द्वारा केसर-ए-हिन्द की उपाधि प्रदान की गई। इन्हे यह उपाधि ब्रिटिश के AGG कर्नल इम्पी ने दी।

सितार ए हिन्द - रामसिंह द्वितीय (जयपुर)।

शेर-ए-हिन्द - जयनारायण व्यास

तोता - ए - हिन्द - अमीर खुसरो

केसर-ए-हिन्द - महात्मा गाँधी

केसर-ए-हिन्द - कवि राजा श्यामलदास

महाराणा सज्जनसिंह 1874-1879

- सज्जनसिंह के द्वारा सज्जनगढ़ पैलेस / मानसून पैलेस / मुकुटमणि / वाणी विलास महल (उदयपुर) का निर्माण किया गया।
- सन 1877 में लॉर्ड लिटन आयोजित दिल्ली के दरबार मे भाग लेने वाला मेवाड़ का प्रथम शासक सज्जनसिंह था।
- 2 जुलाई 1877 को सज्जनसिंह द्वारा देश हितेषणी सभा का गठन किया जिसका उद्देशय राजपूताना में वैवाहिक समस्याओं के निराकरण करना था।
- मेवाड़ में 1877 में महाराजा के कोर्ट का नाम बदलकर "इजलास खास कर दिया गया।
- 1879 में राजस्थान की प्रथम साप्ताहिक पत्रिका "सज्जन कीर्ति सुधाकर' का प्रकाशन हुआ जिसके सम्पादक

- 1880 में सज्जनसिंह के समय महेन्द्रसभा का आयोजन हुआ।
- 1880 में सज्जनसिंह द्वारा उदयपुर में सज्जन मंत्रालय (छापा खाना) की स्थापना।
- 1882 में दयानन्द सरस्वती ने परोपकारिणी सभा का गठन उदयपुर में किया।
- दयानन्द सरस्वती उदयपुर में सज्जनसिंह के आग्रह पर आये थे।
- सज्जन सिंह के संरक्षण में स्वामी दयानन्द के द्वारा सत्यार्थ प्रकाश की रचना जगमंदिर में प्रारम्भ की गई।
- सज्जनसिंह ने सत्यार्थ प्रकाश का उदयपुर से प्रकाशन करवाया
- सज्जनसिंह के काल में मेवाड़ में 1881 में प्रथम बार जनगणना का कार्य किया गया।

महाराणा फतेहसिंह 1883-1930

- चितौड़गढ दुर्ग में फतेहसिंह ने फतेह प्रकाश महल बनवाया जो वर्तमान में संग्रहालय है।
- फतेहसिंह के समय 1888-89 में AGG वाल्टर ने राजपुत हितकारिणी सभा का गठन किया गया ।
- जब बिजौलिया किसान आन्दोलन (1897-1941) की शुरूआत हुई तब मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह थे ।
- जब फतेहसिंह 1303 में एडवर्ड सप्तम के दरबार में शामिल होने जा रहे थे तब केसरी सिंह बारहठ ने इनके पौरष को जगाने हेतु चेतावनी रा चुंगटिया लिखकर भेजे।

- जिन्हें पढ़ने के बाद फतेहसिंह ने दिल्ली में रहते हुए भी दिल्ली दरबार में भाग नहीं लिया।
- केसरीसिंह बारहठ को राजस्थान केसरी कहा जाता है।
- केसरी सिंह बारहठ की प्रमुख रचनाएं- रूठी राणी, प्रताप चरित्र, राजसिंह चरित्र दुर्गादास चरित्र, चेतावनी रा चुग्टयां (13 सोरठे डिंगल भाषा में)

महाराणा भूपासिंह 1930-1955

- राजस्थान के एकीकरण के समय मेवाड़ महाराणा भूपालसिंह थे। जो महाराज प्रमुख का पद प्राप्त करने वाले एकमात्र शासक थे।
- एकीकरण के समय एकमात्र अपाहिज शासक राजप्रमुख तथा महाराज प्रमुख भूपालसिंह था।
- 1955 में महाराणा भूपालसिंह की मृत्यु के साथ ही महाराजप्रमुख का पद समाप्त कर दिया गया।